ISSN: ISSN: 2583-5149 | Special Edition Vol. 2 | March 2026

भारतीयज्ञान परंपरा की दृष्टि से श्रीमद्भगवद्गीता और उपनिषदों का दार्शनिक विश्लेषण

अंकित कुमार पाण्डेय
शोधछात्र, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रस्तावना:-

भारतीय दर्शन की सम्पूर्ण परंपरा का मूल वेद हैं। वेदों के कर्मकाण्डीय, उपासना एवं ज्ञानकाण्ड–तीनों का परिपाक उपनिषदों में दिखाई देता है। उपनिषदों को वेदों का अन्तिम भाग होने के कारण "**वेदान्त**" कहा गया है। औपनिषदिक दर्शन का लक्ष्य केवल तात्त्विक विवेचन नहीं, बल्कि अज्ञान के बन्धन से मुक्त होकर आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति है। भारतीय ज्ञान परंपरा में उपनिषद तथा श्रीमद्भगवद्गीता का स्थान केन्द्रीय, मूलभूत और आधारभूत है। उपनिषद वैदिक साहित्य के दार्शनिक शिखर के रूप में ब्रह्म, आत्मा, जगत् और मोक्ष जैसे गूढ़ तत्त्वों का प्रतिपादन करते हैं, जबकि श्रीमद्भगवद्गीता उन्हीं औपनिषदिक सिद्धान्तों को जीवन, कर्म, समाज और नैतिकता से जोड़कर प्रस्तुत करती है। श्रीमद्भगवद्गीता जो महाभारत के भीष्मपर्व का अंग है, भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐसा ग्रंथ है जो उपनिषद के तत्त्वज्ञान को जीवन की व्यवहारभूमि में उतारता है। युद्धभूमि में विषादग्रस्त अर्जुन और उपदेशक श्रीकृष्ण का संवाद मानव जीवन के शाश्वत दार्शनिक संकटों का प्रतीक है। शंकराचार्य द्वारा गीता को 'गीतोपनिषद्' कहा जाना इस तथ्य को पुष्ट करता है कि गीता उपनिषदों का सारभूत रूप है–

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः ।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ॥[1]

भारतीय ज्ञान परंपरा का दार्शनिक आधार -

भारतीय ज्ञान परंपरा का लक्ष्य केवल ज्ञान-संग्रह नहीं, अपितु जीवन का परिष्कार है। यह परंपरा 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' के आदर्श पर आधारित है। यहाँ दर्शन जीवन से पृथक नहीं, बल्कि जीवन का मार्गदर्शक है। श्रुति (वेद-उपनिषद्), स्मृति (गीता, धर्मशास्त्र), दर्शन (षड्दर्शन), आचार और साधना–इन सबका समन्वय भारतीय ज्ञान परंपरा की विशिष्ट पहचान है। उपनिषदों में ज्ञानमार्ग की प्रधानता है, जबकि गीता ज्ञान को कर्म और भक्ति से जोड़कर समन्वयवादी दृष्टि प्रस्तुत करती है। उपनिषदों का केन्द्रीय विषय ब्रह्म है। ब्रह्म को परम सत्य, नित्य, सर्वव्यापक और निर्विकार बताया गया है– **सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म** [2]

ब्रह्म को सृष्टि का कारण, आधार और लक्ष्य माना गया है। वह न केवल जगत् का उपादान कारण है, बल्कि निमित्त कारण भी है।

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति।
यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति। तद्विजिज्ञासस्व। तद्ब्रह्मेति॥[3]

यह ब्रह्म निराकार, निर्गुण और अद्वैत है, जिसे बुद्धि और इन्द्रियों द्वारा नहीं, बल्कि आत्मज्ञान द्वारा जाना जा सकता है।

आत्म-तत्त्व और ब्रह्मात्मैक्य - उपनिषदों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त आत्मा और ब्रह्म की ऐक्यता है। आत्मा को नित्य, शुद्ध, बुद्ध और मुक्त स्वरूप बताया गया है–

न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥[4]

महावाक्यों के माध्यम से उपनिषद् आत्म-ब्रह्म ऐक्य का प्रतिपादन करते हैं–

---

1 गीता माहात्म्य

2 तैत्तिरियोपनिषद 2.1.1

3 तैत्तिरियोपनिषद 3.1.1

4 कठोपनिषद् 1.2.18

अहं ब्रह्मास्मि[5] तत्त्वमसि[6]

यह अद्वैत दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा का दार्शनिक शिखर है। उपनिषदों में मोक्ष को अज्ञान-निवृत्ति और आत्मसाक्षात्कार के रूप में परिभाषित किया गया है। मोक्ष कोई स्थान नहीं, बल्कि चेतना की अवस्था है–

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयँ सह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥[7]

ज्ञान ही मोक्ष का साधन है–

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥ [8]

श्रीमद्भगवद्गीता : उपनिषद दर्शन का व्यावहारिक रूप -गीता उपनिषदि के तत्त्वज्ञान को जीवन की व्यवहारिक परिस्थितियों में प्रस्तुत करती है। अर्जुन का विषाद उपनिषदों के 'अविद्या' तत्त्व का जीवंत उदाहरण है। श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश ज्ञान, कर्म और भक्ति का समन्वय प्रस्तुत करता है। गीता में आत्मा का स्वरूप गीता आत्मा की नित्यता, अविनाशिता और अकर्तृत्व पर बल देती है–

न जायते म्रियते वा कदाचिन् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः [9]

यह विचार कठोपनिषद् से सीधा साम्य रखता है।

- **कर्म-सिद्धान्त :** गीता का मौलिक योगदान- उपनिषदों में कर्म की अपेक्षा ज्ञान की प्रधानता है, किंतु गीता कर्म को त्यागने के बजाय उसके शुद्धिकरण का मार्ग बताती है–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन [10]

निष्काम कर्म आत्मशुद्धि का साधन है–

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः[11]

---

[5] बृहदारण्यकोपनिषद् 1.4.10
6 छान्दोग्योपनिषद् 6.8.7
7 ईशावास्योपनिषद 11
8 श्वेताश्वतरोपनिषद् 3.8
9 श्रीमद्भगवद्गीता 2.20
10श्रीमद्भगवद्गीता 2.47
[11] श्रीमद्भगवद्गीता 5.10

➢ **ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग का समन्वय** - गीता का दार्शनिक वैशिष्ट्य त्रिविध योग का समन्वय है।

- ज्ञानयोग-**न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते**[12] (गीता 4.38)
- भक्तियोग-**भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः**[13] (गीता 18.55)
- कर्मयोग-**योगः कर्मसु कौशलम्** [14](गीता 2.50)

➢ **निर्गुण और सगुण ईश्वर का समन्वय** -उपनिषदों में ईश्वर का स्वरूप प्रायः निर्गुण है–

नेति नेति (बृहदारण्यकोपनिषद्)

गीता उसी ब्रह्म को सगुण, साकार रूप में प्रस्तुत करती है–

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।

इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।।[15]

सामाजिक और नैतिक दर्शन- गीता उपनिषदिक आत्मज्ञान को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ती है। यह भारतीय ज्ञान परंपरा के लोकमंगलकारी स्वरूप को स्पष्ट करता है-

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।

लोकसंग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि ॥[16]

➢ **आचार्यों की व्याख्यात्मक परंपरा** - शंकराचार्य ने अद्वैत, रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत और माध्वाचार्य ने द्वैत दृष्टि से गीता-उपनिषद् की व्याख्या की। इससे इन ग्रंथों की दार्शनिक व्यापकता सिद्ध होती है।

निष्कर्ष - भारतीय ज्ञान परंपरा की दृष्टि से उपनिषद् और श्रीमद्भगवद्गीता एक ही दार्शनिक परंपरा के दो पूरक आयाम हैं। उपनिषद् तत्त्वज्ञान की गहराई प्रदान करते हैं, जबकि गीता उस ज्ञान को जीवन की व्यवहारभूमि में उतारती है। ज्ञान, कर्म और भक्ति का समन्वय, निर्गुण-सगुण की एकता और मोक्ष की

12 श्रीमद्भगवद्गीता 4.38
13 श्रीमद्भगवद्गीता 18.55
14 श्रीमद्भगवद्गीता 2.50
15 श्रीमद्भगवद्गीता 10.8
16 श्रीमद्भगवद्गीता 3.20

सार्वभौमिक साधना—ये सभी भारतीय दर्शन को वैश्विक और सार्वकालिक बनाते हैं। अतः गीता और उपनिषद् भारतीय ज्ञान परंपरा के अमूल्य स्तम्भ हैं।

संदर्भग्रन्थ सूची:-

1. आदि शंकराचार्य. (2016). दशोपनिषद् भाष्य. गोरखपुर: गीताप्रेस।
2. श्रीमद्भगवद्गीता (शांकर भाष्य सहित). (2019). गोरखपुर: गीताप्रेस।
3. श्रीमद्भगवद्गीता (रामानुज भाष्य सहित). (2017). गोरखपुर: गीताप्रेस।
4. श्रीमद्भगवद्गीता (माध्व भाष्य सहित). (2016). गोरखपुर: गीताप्रेस।
5. श्वेताश्वतर उपनिषद् (शांकर भाष्य सहित). (2015). गोरखपुर: गीताप्रेस।
6. उपाध्याय, बलदेव. (1998). भारतीय दर्शन की भूमिका. वाराणसी, भारत: चौखम्भा विद्याभवन।
7. चटर्जी, सतीशचन्द्र, एवं दत्ता, धीरेन्द्रमोहन. (1939). भारतीय दर्शन का परिचय. कोलकाता, भारत: कलकत्ता विश्वविद्यालय।
8. व्यास. (2014). महाभारत (भीष्मपर्व). गोरखपुर, भारत: गीताप्रेस।